बाइस साल बाद मिले तो याद आए पुराने दिन

सहारा न्यूज ब्यूरो

कानपुर, 12 जनवरी। आईआईटी में आज जहां 1982 बैच के पूर्व छात्र बाइस साल बाद मिले तो उनकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। पहले दिन पूर्व छात्रों ने संरक्षण के अतिथि गृह की हरियाली में बैठकर धूप का मजा लिया। फिर आउट रीच सेंटर में एक-दूसरे का परिचय देकर खूब खिल्ली उड़ायी। पुरानी यादें ताजा की। पुरानी राजकुमार फिल्म का आनंद उठाया।

आईआईटी के आउटरीच सेंटर में 22 साल बाद जमा हुए 82 बैच के पूर्व छात्र।

आईआईटी में कम्प्यूटर साइंस विभाग के प्रमुख प्रो. धीरज सांगी, प्रो. मनीन्द्र अग्रवाल व इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग के प्रो. अजीत चतुर्वेदी ने पूर्व छात्रों का स्वागत किया। प्रो. धीरज सांगी ने बताया, 22 साल बाद उनके बैच के 65 छात्र-छात्राएं इकट्ठे हुए। इनमें पांच लोग विदेशों से यहां पहुंचे। इस बैच के 25 पूर्व छात्र सरकारी इंजीनियरिंग व सिविल सेवा में आईएएस व अन्य उच्च पदों में तैनात हैं। दो दिवसीय समागम में पहले दिन पूर्व छात्र व छात्राएं अतिथि गृह में जमा हुए।

लम्बा वक्त गुजरने के चलते कई पूर्व छात्र तो हुलिया बदलने से एक-दूसरे को पहचान नहीं पा रहे थे। इस काम में निक नेम ने उनकी मदद की। दोपहर का वक्त उन्होंने हरियाली में धूप में बैठकर गुजारा। पुरानी यादें ताजा हुईं। अतिथि गृह में सभी ने स्वादिष्ट व वैरायटी युक्त भोजन का मजा लिया। इसके बाद आउट रीच भवन पहुंचे। भवन सभागार में प्रो. सांगी ने एक-एक करके सभी पूर्व छात्रों को मंच पर बुलाया जहां पूर्व छात्रों ने अपने परिचय के साथ पुरानी यादें ताजा कीं।

इस मौके पर पूर्व छात्र पत्रकारों से भी रूबरू हुए। भुवनेश्वर में एटीफेन टेक्नालाजी साफ्टवेयर कंपनी के मालिक व पूर्व छात्र नारायन बेहरा ने बताया, उनकी कंपनी इंजीनियरिंग डिजाइन व आईटी साफ्टवेयर बनाती है। वर्ष 86 में संस्थान में आल राउंडर का खिताब पाने वाले गोल्ड मेडलिस्ट व इलेक्ट्रिकल इंजीनियर कंवर जीत सिंह ने बताया, उनकी बंगलौर स्थित तेजस नेटवर्क पहली कंपनी है जो देश में टेली उपकरण बनाती है। कंपनी 60 देशों में अपने उत्पाद निर्यात कर रही है।

आईआईटी में 82 बैच के पूर्व छात्रों का मिलन

उन्होंने बताया इस समय वह इंटरनेट की स्विचिंग में सर्किट की जगह पैकेट स्विचिंग पर काम कर रहे हैं जिसमें एक ही लाइन यानि नेटवर्क पर वाइस, डाटा व टीवी की सुविधा मिलेगी। बीएसएनएल ने नयी तकनीक की सेवा कुछ मेट्रो सिटी में शुरू भी कर दी है।

प्रो. मनीन्द्र अग्रवाल ने बताया, प्राइम नम्बर का पता लगाने वाला फार्मूला खोजने के बाद वह गणित की समस्या हल करने पर काम कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि कम्प्यूटर की कार्य क्षमता बढ़ाने के लिए टेराबाइट के बाद पेटाबाइट पर काम चल रहा है।

समागम के अवसर पर दोपहर बाद पूर्व छात्रों ने राजकुमार फिल्म देखी। शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रमों का मजा लिया।